>

Title: Regarding mandatory service of doctors in the rural areas of the country.

डॉ. संजय जायसवाल : बहुंत-बहुत धन्यवाद अध्यक्ष महोदया। मैं आपके माध्यम से सदन का ध्यान मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया और माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जी द्वारा दिए गए तुगलकी फरमान की तरफ दिलाना चाहता हूं। आपने स्वयं, विपक्ष की नेता माननीय श्रीमती सुषमा स्वराज जी, डॉ. गिरिजा व्यास जी, सभी ने महिलाओं के उत्पीड़न पर कितनी बार इस सदन में बहस की है। इसी देश में यह कानून बनता है कि 22 और 23 साल की लड़कियों को जबर्दस्ती कहा जाता है कि अगर आपको डाक्टर बनना है, पीजी करना है, तो हर हालत में गांव में जाना पड़ेगा। जिस देश में महिलाएं दिल्ली और मुंबई में सुरक्षित नहीं हैं, उस समय एक ऐसा कानून बनाना कि 22-23 साल की लड़कियों को अगर एमएस-एमडी करना है, तो हर हालत में गांव में जाना पड़ेगा, उचित नहीं है। अगर इस तरह का कोई कानून पास ही करना है, तो सबसे पहले हम सांसदों को करना चाहिए, सबसे पहले हम अपनी बेटियों को बिहार और उत्तर प्रदेश के गांवों में भेजें जिससे पूरे विश्व में एक मैसेज जा सके कि हमारे देश में लड़कियां कितनी सेफ हैं। ...(व्यवधान) यहां पर कोई ऐसी महिला सांसद नहीं हैं, जो यह कहती हों कि हम यहां पर इस चीज के लिए डरते हैं। ...(व्यवधान) यह संविधान में दिए गए मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। कोई व्यक्ति अगर सरकारी नौकरी करता है, तो उसको पहले लिखकर दे सकते हैं कि उसे गांव में नौकरी करनी पडेगी, लेकिन आप किसी को बिना नौकरी दिए हुए जबर्दस्ती कर रहे हैं कि एक साल गांव में जाना पड़ेगा, तो यह सरासर गलत है। दूसरी बात मैं माननीय मंत्री जी से यह कहना चाहूंगा कि अगर इस तरह का कोई कानून बनाना भी है, तो एमएस या एमडी कोर्सेज के दूसरे वर्ष की छात्राओं के लिए बनाएं क्योंकि अगर वह छात्र या छात्रा एक साल पोस्ट ग्रेजुएशन की डिग्री कर लेगा, तो उसको इतनी ज्यादा जानकारी हो जाएगी कि वहां जाकर काम कर सके।...(व्यवधान)

श्री तूफ़ानी सरोज (मछलीशहर): बलात्कार की घटनाएं शहरों में होती हैं, गांवों में नहीं होती हैं।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप बैठ जाइए।

डॉ. संजय जायसवाल : आप किसी भी लड़की या लड़के को इस बात के लिए फोर्स नहीं कर सकते हैं कि वह हर हालत में एक साल गांव में काम करे। यह संविधान के मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है। मेरा आपके माध्यम से अनुरोध है कि इस तरह का तुगलकी फरमान बंद किया जाए। आप उनको सरकारी नौकरी में रखिए, फिर उसे कहीं भी भेजिए, कोई दिक्कत नहीं होगी। लेकिन किसी भी लड़की को किसी भी गांव में भेजना बिल्कुल गलत है।...(व्यवधान)

अध्यक्ष महोदया : आप लोग बैठ जाइए।

डॉ. संजय जायसवाल : अध्यक्ष महोदया, आपने मुझे इस बात को उठाने का मौका दिया, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

अध्यक्ष महोदया :

डॉ. किरीट प्रेमजीभाई सोलंकी,

श्री शिवकुमार उदासी

*m04 डॉ. संजय जायसवाल जी द्वारा शून्य प्रहर में उठाए गए विषय से स्वयं को सम्बद्ध करते हैं।